NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

भारतीय काव्यशास्त्र

B.H.D.C.-106

B.A. Hindi (Hons.) - 3rd Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Rajesh Kumar*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारतीय काव्यशास्त्र

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. भारतीय काव्यशास्त्र : एक परिचय 1

2. हिंदी काव्यशास्त्र का विकास : संदर्भ–रीतिकाल 14

3. हिंदी काव्यशास्त्र का विकास : संदर्भ–आधुनिक काल 24

4. काव्य-लक्षण 33

5. काव्य हेतु एवं काव्य प्रयोजन 45

6. रस सिद्धांत : अवधारणा और आयाम 60

7. रस निष्पत्ति एवं साधारणीकरण 69

8. अलंकार संप्रदाय : स्वरूप एवं आयाम 79

9. काव्यालंकार : स्वरूप एवं प्रकार 90

10. रीति सम्प्रदाय : अवधारणा एवं आयाम 99

11. ध्वनि सम्प्रदाय : अवधारणा एवं प्रकार 108

12. वक्रोक्ति सम्प्रदाय : स्वरूप और परिधि 121

13. औचित्य सम्प्रदाय : अवधारणा एवं स्वरूप 130

14. छंद : स्वरूप और प्रकार 140

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

भारतीय काव्यशास्त्र **B.H.D.C.-106**

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. 'रस' निष्पत्ति का आशय स्पष्ट करते हुए इसकी प्रक्रिया का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-69, 'रस निष्पत्ति का आशय और प्रक्रिया'

प्रश्न 2. साधारणीकरण का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए इससे संबंधित संस्कृत आचार्यों के मत का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-70, 'साधारणीकरण का अभिप्राय', 'साधारणीकरण के संबंध में विभिन्न मत : संस्कृत साहित्य'

प्रश्न 3. हिंदी में अलंकार संबंधी चिन्तन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-85, प्रश्न 4

प्रश्न 4. रीति और गुण संबंधी वामन के विचारों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-105, प्रश्न 2, प्रश्न 106, प्रश्न 3

प्रश्न 5. काव्य-लक्षण का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए इससे संबंधित विभिन्न आचार्यों के मत का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-33, 'काव्य लक्षण का अभिप्राय', 'प्रमुख आचार्यों के काव्य लक्षण संबंधी मत'

प्रश्न 6. रीति काल से पूर्व हिंदी में काव्यशास्त्रीय चिन्तन-धारा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-18, प्रश्न 3

प्रश्न 7. व्यंजना शब्द-शक्ति के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-109,'व्यंजना','व्यंजना के भेद', पृष्ठ-118, प्रश्न 2

प्रश्न 8. औचित्य सिद्धान्त का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-133, प्रश्न 2

प्रश्न 9. वक्रोक्ति के अर्थ और स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-123, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) हिंदी में अलंकार संबंधी चिन्तन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-82, 'हिंदी साहित्य में अलंकार संबंधी चिंतन'

(ख) विभाव

उत्तर–विभाव का अर्थ है 'कारण'। जिन कारणों से सहृदय सामाजिक के हृदय में स्थित स्थायी भाव उदबुद्ध होता है, उन्हें विभाव कहते है। ये दो प्रकार के होते हैं–

1. आलंबन विभाव–भावों का उद्‌गम जिस मुख्य भाव या वस्तु के कारण हो वह काव्य का आलंबन कहा जाता है, जैसे–श्रृंगार रस में नायक और नायिका 'रति' संज्ञक स्थायी भाव के आलंबन होते हैं।

आलंबन के अंतर्गत आते हैं–विषय और आश्रय।

***(i)* विषय**–जिस पात्र के प्रति किसी पात्र के भाव जागृत होते हैं, वह विषय है। साहित्य शास्त्र में इस विषय को आलंबन विभाव अथवा 'आलंबन' कहते हैं।

***(ii)* आश्रय**–जिस पात्र में भाव जागृत होते हैं, वह आश्रय कहलाता है।

2. उद्दीपन विभाव–स्थायी भाव को जाग्रत रखने में सहायक कारण उद्दीपन विभाव कहलाते हैं। श्रृंगार रस में नायक के लिए नायिका यदि आलंबन है, तो उसकी चेष्टाएं रति भाव को उद्दीपक करने के कारण उद्दीपक विभाव कहलाती है, रतिक्रिया के लिए उपयुक्त वातावरण, जैसे–चांदनी रात, प्राकृतिक सुषमा, शांतिमय वातावरण आदि विषय उद्दीपक विभाव के अंतर्गत आते हैं।

उदाहरणस्वरूप, वीर रस के स्थायी भाव उत्साह के लिए सामने खड़ा हुआ शत्रु आलंबन विभाव है। शत्रु के साथ सेना, युद्ध के बाजे और शत्रु की दर्पोक्तियां, गर्जना-तर्जना, शस्त्र संचालन आदि उद्दीपन विभाव हैं।

उद्दीपन विभाव के दो प्रकार माने गये हैं–

(i) आलंबन-गत (विषयगत) अर्थात् आलंबन की उक्तियां और चेष्टाएं

(ii) बाह्य-गत (बर्हिगत) अर्थात् वातावरण से संबंधित वस्तुएं। प्राकृतिक दृश्यों की गणना भी इन्हीं के अंतर्गत होती हैं।

(ग) प्रतिभा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-48, प्रश्न 1

(घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का रस-चिन्तन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-62, 'हिंदी साहित्य में रस चिंतन' ■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

भारतीय काव्यशास्त्र **B.H.D.C.-106**

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. रस निष्पत्ति का आशय स्पष्ट करते हुए उसकी प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-69, 'रस निष्पत्ति का आशय और प्रक्रिया'

प्रश्न 2. अलंकार सम्प्रदाय के विकास की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-82, 'अलंकार संप्रदाय का विकास'

प्रश्न 3. 'रीति' का आशय स्पष्ट करते हुए रीति सम्प्रदाय की स्थापनाओं पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-99, 'रीति शब्द का अभिप्राय', 'प्रमुख रीति समर्थक आचार्य'

प्रश्न 4. छंद के प्रमुख प्रकारों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-140, 'छंद के प्रकार'

प्रश्न 5. हिंदी के अपने काव्यशास्त्र के विकास को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-17, प्रश्न-1, अध्याय-3, पृष्ठ-28, प्रश्न-4

प्रश्न 6. 'काव्य हेतु' संबंधी विभिन्न आचार्यों के मतों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-45, 'काव्य हेतु : अभिप्राय एवं आयाम'

प्रश्न 7. 'हिंदी साहित्य में रसचिंतन की परम्परा' विषय पर एक निबंध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-62, 'हिंदी साहित्य में रस चिंतन'

इसे भी देखें–डॉ. नगेन्द्र का नाम आधुनिक युग काव्यशास्त्रियों में अग्रगण्य है। इन्होंने रीति काव्य की भूमिका, भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा और रस सिद्धान्त नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का प्रणयन कर हिन्दी साहित्य में काव्यशाL=k foo‍चन परम्परा को नई दिशा दी। यद्यपि रीति काव्य की भूमिका में ही रस सम्प्रदाय का विशद विवेचन कर दिया था, किन्तु 'भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा' तथा 'रस सिद्धान्त' रचनाओं में अन्य काव्यशास्त्रीय चिन्तनों के साथ रसवाद का सम्बध व स्वरूप स्थिर करते हुए हिन्दी साहित्य को रसमय ही बना दिया। उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को प्रतिपादित करते हुए कुछ अभीष्ट अशों का उल्लेख ही यहां प्रस्तुत है। आरम्भिक रसवादी नन्दिकेश्वर के सन्दर्भ में वे कहते हैं–रस वर्णन उन्होंने कहीं अधिक विस्तार और रुचि के साथ किया है।

'नाट्यशास्त्र' में रस दशा का विशद विवेचन करते हुए निष्कर्ष रूप में कहते हैं, "इन सब प्रभावों के आधार पर यह निश्चयपूर्वक सिद्ध हो जाता है कि रस सिद्धान्त का सर्वप्रथम तथा स्वतः सम्पूर्ण प्रतिपादन नाट्य शास्त्र में मिलता है।"

रूद्रट के योगदान पर टिप्पणी करते हुए वे कहते हैं, "रस का वर्णन पूरे चार अध्यायों में वैसे ही विस्तार और मनोनिवेश के साथ किया है जैसा कि सामान्य ध्वनिवादी ग्रन्थों में मिलता है। वे ध्वनि काल के चिन्तक भट्टनायक के विषय कहते हैं–भट्टनायक ने साधारणीकरण सिद्धान्त की उद्‌भावना द्वारा काव्यास्वाद की मौलिक समस्या का अत्यन्त मार्मिक समाधान प्रस्तुत किया है। भट्टतौत के योगदान को अनुगमय मानते हुए कहते हैं–हमारे गुरु भट्टतौत का तो मत यह है कि नाटक में रस का आस्वादन उस (गीत) के द्वारा ही होता है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार 'रस के प्रति अभिनव का आग्रह सर्वथा असंदिग्ध है–'उनका रस विवेचन व्यापक और गम्भीर होने के साथ-साथ अत्यन्त प्रबल है और इस दृष्टि से भारतीय रसशास्त्र में उनका स्थान अन्यतम है।' ध्वनिकार आनन्दवर्धन के योगदान को महत्त्व देते हुए रस और ध्वनि को भिन्न मानते हुए भी कहते है–इसमें 'सन्देह नहीं कि रस के प्रति आनन्दवर्धन का आग्रह किसी भी रसवादी से कम नहीं हैं।' वे राजा भोज के रस प्रतिपादन को भी अनदेखा नहीं करते–'रस के प्रति भोज का आकर्षण उसके अत्यन्त विस्तृत वर्णन से भी स्वतः सिद्ध है। रस के प्रत्येक अवयव का जितना सांग और परिपूर्ण वर्णन 'शृंगार प्रकाश' में किया गया है, उतना संस्कृत काव्यशास्त्र में और कहीं नहीं मिलता।' हिन्दी रसवादी आचार्यों, कवियों का उल्लेख भी डॉ. नगेन्द्र ने अपने इन ग्रथों में किया है–महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'रसज्ञरंजन' में अंतःकरण की वृत्तियों के चित्र को काव्य की संज्ञा देकर भावतत्व का महत्त्व स्वीकार किया। तथा प्राचीन पण्डित और कवि लेख में 'काव्याभास' को स्वीकार किया।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

यही नहीं रस के प्रति पाश्चात्य दृष्टिकोण को समझने का भी प्रयास इनके 'रस सिद्धान्त' नामक ग्रंथ में किया गया है। विभिन्न मतों के अन्तर्विरोधों का शमन कर मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी साहित्य में रस की स्थिति स्वीकार की है। डॉ. नगेन्द्र साहित्य के सामयिक और चिरन्तन मानवीय पक्षों का निर्धारण करके ही रस को काव्यात्मा के रूप में स्वीकारते हैं। वे मानते हैं कि साहित्य वैयक्तिक वस्तु है और सामाजिक चेतन के आश्रित होने के कारण व्यक्ति की अनुभूति को समाज ग्रहण करता है। वे रसानुभूति को साधारणीकरण की प्रक्रिया का अंग स्वीकारते हैं।

रस सिद्धान्त के सम्बन्ध में अपनी दृष्टि स्पष्ट करते हुए कहते हैं, ''इस प्रकार रस सिद्धान्त अत्यन्त व्यापक सिद्धान्त है उसके दृष्टिकोण में विवेकपूर्ण सहिष्णुता मिलती है अनुभूति की सीमा के भीतर रहकर वह अलंकार रीति गुण, वक्ता और ध्वनि के साथ भी पूर्ण सहयोग करता है और सभी का उचित सहयोग प्राप्त करता है।''

इस सब के बावजूद वे रस सिद्धान्त की कुछ सीमाएं अवश्य स्वीकारते हैं–यथा रस सिद्धान्त की सीमा यह भी है कि वह रस को केवल सौंदर्यनिष्ठ मानकर चलता है, जिसके कारण काव्यगत रस की सर्वथा उपेक्षा हो जाती है। दूसरे रसों के विरोध और अवरोध की स्थिर धारणाओं के कारण रस के क्षेत्र का परिसीमन हो गया है।

डॉ. नगेन्द्र के अमूल्य योगदान पर टिप्पणी करते हुए डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त लिखते हैं–डॉ. नगेन्द्र ने अपनी सबल लेखनी के बल पर उसे नूतन गौरव प्रदान किया है। उन्होंने एक ओर तो आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के आलोक में उसकी नूतन और स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है तो दूसरी ओर विरोधियों के आक्षेप प्रहारों का भी निराकरण सफलतापूर्वक किया है। अत: निश्चय ही रस सैद्धान्तिक परम्परा के विकास में डॉ. नगेन्द्र का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इसी प्रकार विष्णुदत्त राकेश मानते हैं कि साहित्य के सामयिक और चिरन्तन मानवीय पक्षों का निर्धारण करके ही वह रस को काव्यात्मा के रूप में स्वीकारते हैं।

सार रूप में कहा जा सकता है कि रस सिद्धान्त का जैसा मनोवैज्ञानिक और विस्तृत विवेचन डॉ. नगेन्द्र ने किया है, वैसा विश्लेषण शायद ही कोई कर पाया हो, इन्होंने रस सिद्धान्त से जुड़ा कोई पक्ष या सिद्धान्त अछूता नहीं छोड़ा है। गहन चिन्तन-मनन के उपरान्त ही अपने निष्कर्ष तय किये हैं।

हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यों की रस-दृष्टि संस्कृत आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट रस-सिद्धान्त पर ही आधारित है। वे अभिनवगुप्त, मम्मट, विश्वनाथ आदि आचार्यों से विशेष रूप से प्रभावित है। इनके यहाँ कोई मौलिक चिंतन नहीं दिखाई देता।

आधुनिक हिन्दी समीक्षकों में रामचन्द्र शुक्ल ने व्यापक रूप से रस-सिद्धान्त की मीमांसा किया है। उन्होंने 'रस मीमांसा' तथा 'चिन्तामणि' (भाग 1-2) में रस की चर्चा करते हुए रस को आधुनिक संदर्भों, में शब्द-भेद के द्वारा नये लक्षण दिए हैं–

1. 'हृदय की अनुभूति ही साहित्य में रस और भाव कहलाती है।'

2. 'जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।'

3. 'लोक हृदय में हृदय के लीन होने की दशा का नाम रस दशा है।'

4. 'हृदय के प्रभावित होने का नाम ही रसानुभूति है।'

5. शुक्ल जी रसानुभूति को लौकिक मानते हैं।

6. शुक्ल जी ने रस को काव्य की आत्मा माना है।

7. आचार्य शुक्ल ने विरोध और अविरोध के आधार पर संचारियों के चार वर्ग किए हैं–सुखात्मक, दुखातमक, उभयात्मक और उदासीन।

श्यामसुन्दर दास ने 'साहित्यलोचन' तथा 'रूपक-रहस्य' में रस-सिद्धान्त का विवेचन किया है। उनकी प्रमुख स्थापनाएं निम्न हैं–

1. वे रस की अभिव्यक्ति को भावों से मानते हैं।

2. इन्हीं भावों के उद्दीप्त और उद्‌बुद्ध होने पर रस की निष्पत्ति होती है।

3. रस का मूल आधार स्थायी भाव हैं और विभाव, अनुभाव और संचारी भाव, स्थायी भाव को रस की अवस्था तक पहुचाने में सहायक हैं।

गुलाब राय ने 'सिद्धांत और अध्ययन' में काव्य का मुख्य उद्देश्य आनंद को माना हैं। गुलाब जी की दृष्टि में रस आनंद रूप है, इसीलिए वे भी 'काव्य की आत्मा' रस को मानते हैं।

नंदुलारे वाजपेयी के अनुसार "काव्य तो प्रकृत मानव अनुभूतियों का, नैसर्गिक कल्पना के सहारे, ऐसा सौन्दर्यमय चित्रण है, जो मनुष्य मात्र में स्वभावत: अनुरूप भावोच्छवास् और सौन्दर्य-संवेदन उत्पन्न करता है। इसी सौन्दर्य-संवेदन को भारतीय परिभाषिक शब्दावली में रस कहते हैं।"

लक्ष्मीनारायण सुधांशु ने 'काव्य में अभिव्यंजनावाद' में काव्यानुभूति की स्थिति कलाकार में और रसानुभूति की स्थिति श्रोता में माना है।

प्रश्न 8. प्रमुख अर्थालंकारों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-91, 'अर्थालंकार'

प्रश्न 9. ध्वनि सिद्धांत का महत्त्व निरूपित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-108, 'परिचय', 'ध्वनि सिद्धांत : अवधारणा एवं स्वरूप'

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) वक्रोक्ति सिद्धांत की मूल स्थापना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-123, प्रश्न-1

(ख) आचार्य अभिनव गुप्त

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-68, प्रश्न-2

(ग) काव्य लक्षण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-36, प्रश्न-1

(घ) आचार्य मम्मट

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-34, 'मम्मट', अध्याय-5, पृष्ठ-45, 'मम्मट (ग्यारहवीं शताब्दी उत्तरार्ध)'

■■

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारतीय काव्यशास्त्र

भारतीय काव्यशास्त्र : एक परिचय

1

परिचय

काव्यकार यथार्थ जगत और अपने जीवन से प्राप्त अनुभव को अपनी प्रतिभा के आधार पर रसमय और आनंदायक बनाकर उसकी पुनः संरचना करता है और यह सरंचना ही काव्य कहलाती है। जिस प्रकार कवि के जीवन और जगत में बदलाव होने के साथ उसकी अनुभूति एवं प्रतिभा में भी बदलाव पाया जाता है, ठीक उसी प्रकार काव्य में भी समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलाव होता रहता है। भारतीय आचार्यों ने काव्य के इस बदलाव को अनुभव किया तथा काव्य-रचना की पद्धति एवं उसके प्रयोजन को व्याख्यायित किया, जिसके कारण रस के अतिरिक्त अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आदि सम्प्रदाय उभरकर सामने आए।

अध्याय का विहंगावलोकन

काव्यशास्त्र : स्वरूप, अभिप्राय एवं परिचय

साहित्य समाज का दर्पण होता है, क्योंकि समाज का सजीव चित्रण काव्यकारों द्वारा अपनी रचनाओं के माध्यम से किया जाता है, इसलिए मनुष्य के जीवन में काव्य का अध्ययन आवश्यक होता है, क्योंकि काव्य व्यक्ति के अंदर जीवन मूल्यों के अतिरिक्त प्रकृतिक रूप से भिन्न भिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं और मानव के प्रति संवेदना जागृत करने का कार्य भी करती है। मनुष्य मन की मूल प्रवृतियां–सुख, दुःख, हर्ष, शोक, क्रोध, विस्मय, घृणा, जुगुप्सा, भय आदि वास्तविकता पर आधारित होती हैं, जिनका वर्णन करना ही काव्य का प्रमुख ध्येय होता है।

भरतमुनि के 'नाट्शास्त्र' में रस से तात्पर्य काव्य का अध्ययन करने अथवा नाटक में अभिनेता के अभिनय को देखकर पाठक के मन में जिस आनंद का अनुभव होता है, वही रस है। यह रस कैसे प्राप्त होगा? पाठक या श्रोता इसका अनुभव कैसे करेगा? इसी संदर्भ में रस, अंलकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य जैसे सम्प्रदाय उभरे।

इसके परिणामस्वरूप काव्य में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। प्राचीन विद्वानों ने इस परिवर्तन को महसूस किया है। उसके बाद काव्य-रचना की पद्धति एवं उसके प्रयोजन की व्याख्या को प्रस्तुत किया है। जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसका अध्ययन आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में काव्य का अध्ययन आवश्यक होता है।

भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय

भारतीय काव्यशास्त्र में विभिन्न सम्प्रदाय उभरकर सामने आये, जिनका परिचय निम्नलिखित है–

रस सम्प्रदाय–भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में रस का विस्तृत वर्णन किया है। मनुष्य के जीवन में 'रस' का प्रयोग आनंद उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, अभिनवगुप्त, भोजराज, विश्वनाथ पण्डितराज जगन्नाथ, केशवदास, रामचंद्र शुक्ल जैसे आचार्यों ने रस सिद्धांत की परंपरा को आगे बढ़ाने का काम किया। भरतमुनि रस सिद्धांत को सूत्रबद्ध करते हुए कहते हैं–

'विभावनुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।'

अर्थात विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। संयोग और निष्पत्ति को लेकर कुछ विद्वानों में मतभेद भी रहा है।

उत्पत्तिवाद–भट्टलोल्लट संयोग का अर्थ उत्पाद्य-उत्पादक संबंध के आधार पर करते हैं और 'निष्पत्ति' का अर्थ उत्पति मानकर वे कहते हैं कि विभावादि तत्वों का संयोग स्थायी भाव से माना जाता है। इसी तरह विभावों से स्थायी भाव का संयोग होने से रस की उत्पत्ति होती है। अनुभावों से उनकी प्रतीति होती है और संचारी भावों से उसकी पुष्टि होती है। भट्टलोल्लट रस की स्थिति को 'अनुकार्य' अर्थात ऐतिहासिक पात्र राम अथवा सीता आदि ऐतिहासिक पात्रों में मानते हैं।

अनुमितिवाद–शंकुक संयोग का अर्थ अनुमाप्य और अनुमापक संबंध के आधार पर मानते हैं एवं उत्पति का अर्थ अनुमिति के आधार पर स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार विभावादि अनुमापक

www.neerajbooks.com

एवं रस को अनुमाप्य माना है। रस की स्थिति को शंकुक ऐतिहासिक पात्रों में ही मानते हैं। जैसे किसी घोड़े के चित्र को देखते हुए घोड़े का अनुमान कर लेना।

भुक्तिवाद–भट्टनायक ने सबसे पहले रस निष्पत्ति का वर्णन काव्य को मध्य में रखरकर किया है। इन्होंने विभाव आदि को भोज्य और संयोग के अर्थ भोज्य-भोजक संबंध बताया एवं निष्पत्ति का अर्थ भुक्ति को मानते हैं। भट्टनायक रस निष्पत्ति का वर्णन काव्य को केन्द्र में रखकर करते हैं। वे विभावादि को भोजक और रस को भोज्य रूप में स्वीकार करते हैं। व्याख्याकारों ने अपने ढंग से व्याख्यायित किया है।

अभिव्यक्तिवाद में अभिनवगुप्त संयोग का अर्थ व्यंग्य-व्यंजक संबंध और निष्पत्ति को अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया है। आचार्य विश्वनाथ रसात्मक वाक्य को काव्य मानते हैं। आनंदवर्धन, महिमभट्ट, राजशेखर, पंडितराज जगन्नाथ, कुंतक, जयदेव आदि सभी रस के महत्त्व को स्वीकार करते हैं।

अलंकार सम्प्रदाय

काव्य के क्षेत्र में अलंकारत्व की स्थापना का इतिहास बहुत पुराना रहा है। प्राचीन भारतीय साहित्य में अलंकार शब्द को सौंदर्य का पर्यायवाची माना गया है। अलंकार का शब्दिक अर्थ है–आभूषण अर्थात शोभा बढ़ाने वाला। भरतमुनि के रस सम्प्रदाय के बाद अलंकार सम्प्रदाय ही सबसे प्राचीन माना जाता है। 'नाट्यशास्त्र' में उपमा, रूपक, दीपक और यमक इन चार अलंकारों की चर्चा हुई है। भामह ने वक्रोक्ति को सभी अलंकारों का मूल माना है। अलंकारवादी आचार्य अलंकारों को काव्य का मूल मानते हैं और इनके बिना काव्य की कल्पना संभव नहीं मानते।

उदाहरण के रूप में जिस प्रकार नायिका का सौंदर्य अलंकार्य है, परंतु उस सौंदर्य के वर्णन के लिए चांद, गुलाब आदि की जो उपमा दी जाती है, काव्य की दृष्टि में वही अलंकार है। भामह और दण्डी दोनों को भिन्न मानते हैं, जैसे–प्राण और शरीर की सत्ता भिन्न होती है।

रसवादी आचार्यों ने अलंकार्य और अलंकारों में अंतर स्पष्ट करते हुए इन्हें दो भागों में विभक्त किया है–प्रत्यक्ष और मूल। शब्द और अर्थ से तात्पर्य शब्दालंकार और अर्थालंकार से होता है। शब्द और अर्थ तथा रस प्रत्यक्ष रूप माने जाते हैं। इन दोनों के सौंदर्य में वृद्धि अलंकारों के द्वारा ही संभव होती है।

रीति संप्रदाय

रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य वामन माने जाते हैं, जो रीति को काव्य की आत्मा स्वीकार करते हैं। 'रीति' का संकेत भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में भी देखने को मिलता है, जिसे वे प्रवृत्ति कहते हैं, जो विभिन्न देशों के रहन-सहन, वेशभूषा, आचार और व्यवहार को अभिव्यक्त करे, उसे प्रवृत्ति कहा गया है। इसे चार भेदों में विभक्त किया गया है–

1. आवंती,
2. दाक्षिणात्य
3. पांचाली
4. मागधी।

भामह काव्य के दो भेद मानते हैं–वैदर्भी और गौडीय। वामन विशिष्ट पद रचना को रीति मानते हैं तथा उनके अनुसार रीतियां तीन प्रकार की हैं–वैदर्भी, गौडीय और पांचाली। आचार्य वामन रीति के तीन तत्वों–गुण, दोष और अलंकार की चर्चा काव्य में करते हैं।

वैदर्भी में सभी गुण, गौडीय में केवल ओज और कान्ति एवं पांचाली में माधुर्य और सौकुमार्य गुणों को स्वीकार किया गया है। वामन रीति के तीन तत्वों–गुण, दोष और अलंकार की चर्चा काव्य में निम्न आधार पर करते हैं।

गुण–आचार्य वामन ने सर्वप्रथम गुणों का विस्तृत वर्णन किया है। 'काव्य शोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।' अर्थात काव्य के शोभावर्धक सभी तत्व गुणों के अंतर्गत आते हैं।

दोष–आचार्य वामन रीति-निरूपण का दूसरा तत्व दोष को मानते हैं, क्योंकि जब तक किसी रचना में दोष नहीं होगा, तब तक गुणों का समावेश सौंदर्य की सृष्टि करने में समर्थ नहीं हो सकता। रीति के संदर्भ में वामन ने अपने मतानुसार स्पष्ट शब्दों और निर्भ्रांत शैली में व्याख्यायित किया है। अनावश्यक विस्तार को बताते हुए केवल आवश्यक का ही विधान किया है।

अलंकार–अलंकारवादी आचार्यों ने अलंकार को काव्य का 'नित्य' धर्म माना, परंतु वामन ने अलंकार को काव्य का 'अनित्य' धर्म स्वीकार किया और कहा कि सौंदर्य उत्पन्न करने की शक्ति गुणों में है, किंतु अलंकार सौंदर्य उत्पन्न नहीं कर सकते, वे केवल पहले से विद्यमान सौन्दर्य की अभिवृद्धि कर सकते हैं। वामन ने अलंकारों को शब्दालंकार और अर्थालंकार में विभाजित किया और शब्दालंकारों में यमक और अनुप्रास को ही मान्यता दी तथा शेष को इन्हीं के भेद स्वीकार किया। उन्होंने अर्थालंकारों में उपमा को सर्वश्रेष्ठ माना और शेष को उपमा के विभिन्न रूपों व भेदों के रूप में स्वीकृति दी।

ध्वनि संप्रदाय

ध्वनि सम्प्रदाय के प्रर्वतक आचार्य आनंदवर्धन माने जाते हैं। वे ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार करते हैं। ध्वनि का संबंध व्यंजना शब्द शक्ति से है। जिस क्षमता के आधार पर वाक्य का अर्थ निश्चित होता है, उसे शब्द शक्ति कहते हैं। इसके तीन भेद हैं–अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

अभिधा शब्द शक्ति–मुख्य अर्थ अथवा वाच्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है। जिस शब्द के द्वारा मुख्यार्थ का बोध हो वह वाचक कहलाता है और उससे निकलने वाला मुख्य अर्थ वाच्यार्थ होता है। इसके माध्यम से तीन प्रकार के शब्दों की अभिव्यक्ति होती है–रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

लक्षणा शब्द शक्ति–मुख्यार्थ में रुकावट होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के सहारे उससे संबंधित जहां पर अन्य अर्थ लक्षित होता है, वहां लक्षणा शक्ति होती है। यह गौण अर्थ मुख्य अर्थ से संबंधित होता है और इसे रूढ़ अर्थ के सहारे ग्रहण किया जाता है।

1. रूढ़ा लक्षणा शब्द शक्ति–जिस वाक्य में मुख्यार्थ के रुकावट होने पर रूढ़ि के सहारे मुख्यार्थ से संबद्ध दूसरे गौण अर्थ को ग्रहण किया जाए, वहां रूढ़ा लक्षणा शब्द शक्ति होती है।

2. प्रयोजनवती लक्षणा शब्द शक्ति–जिस वाक्य में मुख्यार्थ में रुकावट होने पर किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए मुख्यार्थ से संबंध दूसरा गौण अर्थ ग्रहण किया जाए, वहां प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

व्यंजना शब्द शक्ति–व्यंजना का अभिप्राय है विशेष रूप से स्पष्ट करना, जो शब्द शक्ति बाह्य सौंदर्य के रेशमी पर्दे को हटाकर काव्य के वास्तविक लावण्य को व्यक्त करती है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं। इसके दो भेद हैं–

(क) अभिधामूला ध्वनि–इसमें शब्द का वाच्यार्थ बना रहता है, परंतु वह व्यंग्यार्थ की प्रतीति करता है। इसके दो प्रकार हैं–संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि और असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि या रस ध्वनि–

***(i)* संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि**–इसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ तक आने का क्रम लक्षित होता है।

***(ii)* असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि**–जहां पर वाच्यार्थ ग्रहण करने का क्रम निर्धारित नहीं होता है, वह वाच्यार्थ कहलाता है। उसके बाद यह व्यंग्यार्थ है, वहां यह असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि कहलाती है। जिस प्रकार रचना को पढ़कर पाठक के मन में रस कब उत्पन्न हुआ, यह कहना कठिन है, परंतु रस की निष्पत्ति होना वास्तविक है। असंलक्ष्य ध्वनिक्रम अनेक प्रकार की होती है, जैसे–रस, भाव, रसाभास, भावशबलता, भावोदय, भावसनिध और भावशान्ति।

(ख) लक्षणामूला ध्वनि–काव्य में लक्षणामूलाक ध्वनि के मुख्यार्थ में रुकावट होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के सहारे उससे संबंधित, जहां पर अन्य अर्थ लक्षित होता है, वहां लक्षणा शक्ति होती है। इसके दो प्रकार हैं–

***(i)* अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि**–जिस ध्वनि से वाच्यार्थ अपना पूरा तिरोभाव न करके केवल अपना अर्थ रखते हुए दूसरे अर्थ में संक्रमण करता है, वहां अर्थांतर संक्रमित ध्वनि होती है।

***(ii)* अत्यंत तिरस्कृत वाच्य ध्वनि**–जिस ध्वनि में वाच्यार्थ का हमेशा के लिए त्याग हो जाता है, वह तिरस्कृत वाच्य ध्वनि कहलाती है। इस प्रकार का लक्षण लक्षणा शब्द शक्ति पर आधारित है।

1. शाब्दी व्यंजना में शब्द की प्रधानता रहती है अर्थात शब्द विशेष के कारण ही व्यंग्यार्थ की प्राप्ति होती है। इसके भी दो प्रकार हैं–अभिधामूला शब्दी व्यंजना और लक्षणामूलाशाब्दी व्यंजना।

2. आर्थी व्यंजना–जिस शब्द शक्ति में शब्द से अर्थ में कोई अंतर न पड़े, वह आर्थी व्यंजना कहलाती है।

वक्रोति सम्प्रदाय

आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। वक्रोक्ति में किसी भी कथन को प्रत्यक्ष रूप से न कहकर अप्रत्यक्ष रूप में कहते हैं। कुन्तक ने अपने ग्रंथ 'वक्रोक्तिजीविम्' में इसे सैद्धांतिक मान्यता दी है।

कुन्तक मानते हैं कि अलंकार के प्रयोग के बिना काव्य काव्यहीन हो जाता है। कुन्तक वक्रोक्ति के छः प्रकार मानते हैं–

1. वर्ण विन्यास वक्रता
2. पद पूर्वार्ध वक्रता
3. पदपरार्ध वक्रता
4. वाक्य वक्रता
5. प्रकरण वक्रता
6. प्रबंध वक्रता।

कुन्तक के सिद्धांत में कलापक्ष पर बल होने पर भर भी संपूर्ण काव्य को स्वीकृति मिली है। आचार्य कुन्तक द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत भारतीय काव्यशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण एवं मौलिक सिद्धांत है।

औचित्य संप्रदाय

भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा काफी प्राचीन मानी जाती है। आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं। उचित के भाव का नाम औचित्य है। क्षेमेन्द्र ने यथा सदृश्य प्रयोग को उचित और उस उचित के भाव को औचित्य माना है। क्षेमेन्द्र के मतानुसार जिस प्रकार कण्ठ में मेखला, नितम्ब में हार, हाथों में नूपुर आदि औचित्य के कारण हास्यापद होते हैं। उनके अनुसार–

''उचितस्थानविन्यासदलंकृतिरलंकृति
औचित्यादच्चुताः नित्यं भवन्त्येव गुणाः।''

अर्थात अलंकारों और गुणों के भी अयथास्थान प्रयोग से उनका महत्त्व समाप्त हो जाता है। वास्तविक रूप से काव्य ही नहीं मानव जीवन के विविध दैनिक क्रियाकलाप एवं व्यवहार में औचित्य का आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण स्थान है। औचित्य काव्य का एक महत्त्वपूर्ण तथा अनिवार्य तत्व है। इसे काव्य का सर्वस्व मानने का श्रेय तो अभिनवगुप्त के शिष्य क्षेमेन्द्र को जाता है। क्षेमेन्द्र ने 'औचित्य विचार चर्चा' ग्रंथ में रस को काव्य का जीवित तत्व मानते हुए औचित्य को रस का जीवनाधार माना है। काव्य का स्थायी धर्म औचित्य ही है। भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में भी इसका संकेत मिलता है।

क्षेमेन्द्र मानते हैं कि औचित्य के बिना अलंकारों, गुणों, रीतियों का कोई महत्व नहीं है। काव्य का स्थायी धर्म औचित्य ही है। वे संख्या की दृष्टि से 28 माने जाते हैं–1. पद, 2. वाक्य, 3. क्रिया, 4. कारक, 5. लिंग, 6. वचन 7. विशेषण 8. उपसर्ग, 9. नियात, 10. प्रबंध, 11. गुण, 12. अलंकार, 13. रस, 14. सार-संग्रह, 15. तत्व, 16. आर्शीवाद, 17. काव्य के अन्य अंग, 18. व्रत, 19. तत्व, 20. अभिप्राय, 21. स्वभाव, 22. प्रतिभा, 23. विचार, 24. नाम, 25. काल, 26. देश, 27. कुल 28. अवस्था।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. काव्यशास्त्र का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–काव्य मनुष्य चेतना की विभिन्न सृष्टियों की सबसे महान रचनात्मक सृष्टि है। काव्यशास्त्र में इसी का विश्लेषण किया जाता है। काव्य का अभिप्राय काव्य के लक्षण निर्धारित करना होता है। काव्यशास्त्र में साहित्य का दर्शन एवं विज्ञान निहित होता है। आचार्यों द्वारा काव्यकृतियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर विभिन्न सिद्धांतों की रचना की गई। प्राचीन काल में काव्यशास्त्र को साहित्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र के नाम से भी जाना जाता था। हर युग में परिस्थितियों के अनुसार काव्य और साहित्य के कथ्य और शिल्प में परिवर्तन होता रहता है। इसी तरह काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों में भी परिवर्तन होता रहा।

कवि बाह्य जगत एवं जीवन से मिले अनुभवों को अपनी प्रतिभा के बल पर रसमय एवं मनोरंजक बनाकर उसकी संरचना करता है। जिस प्रकार बाह्य जगत में बदलाव होता है, उसी प्रकार कवित की अनुभूति में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। जिसके परिणामस्वरूप काव्य में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। प्राचीन विद्वानों ने इस बदलाव को महसूस किया है। उसके बाद काव्य रचना की पद्धति एवं उसके प्रयोजन की व्याख्या को प्रस्तुत किया है।

जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है और प्रत्येक व्यक्ति को उसका अध्ययन जरूरी है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में काव्य का अध्ययन आवश्यक होता है, क्योंकि काव्य व्यक्ति के अंदर जीवन मूल्यों के अलावा प्रकृति दृष्टि से भिन्न भिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं और मानव के प्रति संवेदना जागृत करने का कार्य करता है। काव्य के तत्व और काव्य रचना की प्रक्रिया के सिद्धांतों का वर्णन ही काव्यशास्त्र का मूल प्रयोजन होता है।

मनुष्य मन की मूल प्रवृतियां–सुख, दुःख, हर्ष, शोक, क्रोध, विस्मय, घृणा, जुगुप्सा, भय आदि वास्तविक हैं और काव्य का कथन इन्हीं के आस-पास घूमता है। भारतीय काव्यशास्त्र की इस परंपरा को विभिन्न आचार्यों ने अपने माध्यम से आगे बढ़ाया है। काव्य के लिए आवश्यक तत्वों को सिद्धांत रूप में प्रतिष्ठित कर काव्य को आनंददायक बनाकर काव्यशोभा में वृद्धि हेतु काव्यशास्त्र से संबंधित आचार्यों विद्वानों का संक्षिप्त विवरण निम्न आधार पर है।

भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में काव्य में रस के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। काव्य का अध्ययन करने या नाटक के अभिनय को देखकर पाठक के मन में जिस आनंद का अनुभव होता है, वही रस है। काव्य रस के रसास्वाद को पाठक या श्रोता के अनुभव के संदर्भ में रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य जैसे सम्प्रदाय काव्यशास्त्र में निर्मित हुए। काव्यशास्त्र काव्य के सम्प्रदायों द्वारा अपने सिद्धांत रस, अलंकार, रीति वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य जैसे सम्प्रदायों द्वारा काव्य के सौंदर्य में वृद्धि करने की व्याख्या करने वाला शास्त्र है।

भामह–सर्वप्रथम भामह ने ही अलंकारों को नाट्यशास्त्र की परतन्त्रता से मुक्त कर एक स्वतंत्र शास्त्र या संप्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित किया। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'काव्यालंकार' में अलंकारों को विशेष महत्त्व दिया गया है। इन्होंने वक्रोक्ति को सब अलंकारों का मूल माना है। काव्य का लक्षण सर्वप्रथम भामह ने प्रस्तुत किया। इसी प्रकार दस के स्थान पर तीन काव्य गुणों की स्वीकृति भी भामह ने सर्वप्रथम दी।

दण्डी–दण्डी अलंकार सम्प्रदाय से संबंध रखते थे। इनके तीन ग्रंथ वर्तमान में उपलब्ध हैं, जिनमें 'काव्यादर्श', 'दशकुमारचरित' और 'अवन्तिसुन्दरी कथा' प्रमुख हैं। इनका पहला ग्रंथ काव्यशास्त्र पर आधारित है तथा अन्य दो गद्य काव्य में रचे गये हैं। काव्य के विभिन्न अंगों का अलंकार में आधारित समझना इनका मान्य सिद्धांत माना जाता था। आचार्य भामह की तरह दण्डी भी वैदर्भ और गौड इन दो काव्य रूपों को माना है तथा इन्हें मार्ग नाम दिया है। गौड मार्ग की अपेक्षा वैदर्भ मार्ग का ये अधिक अनुसरण करते थे, परंतु गौड मार्ग को कभी भी त्याज्य नहीं माना।

उद्‌भट–ये अलंकारवादी आचार्य माने जाते हैं। इनके तीन ग्रंथ प्रसिद्ध माने जाते हैं–'काव्यलंकारसारसंग्रह', 'भामह-विवरण' और 'कुमारसंभव'। इन सभी ग्रंथों में केवल प्रथम ग्रंथ ही उपलब्ध पाया जाता है, जिनके अंतर्गत अलंकारों का आलोचनात्मक एवं वैज्ञानिक ढंग से विवेचन किया गया है। उद्‌भट दण्डी के समान ही रस, भाव आदि को रसवादी अलंकारों के अंतर्गत मानते हैं। अलंकारों को सर्वप्रथम व्यवस्थित रूप देने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है।

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले इन मतों को आचार्यों ने अपने अनुसार परिभाषित किया है। अधिकांश आचार्य रस को काव्य की आत्मा स्वीकार करते हैं। परंतु आधुनिक संदर्भ में विद्वानों ने रस को काव्य सौंदर्य में वृद्धि करने वाला तो माना है, लेकिन यह काव्य के मूल काव्य सौंदर्य बढ़ाने में समर्थ नहीं है।

अंततः कहा जा सकता है कि काव्य के मुख्य प्रयोजन में आनंद ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। पाठक या श्रोता इस आनंद की अनुभूति कैसे हो और इसी संदर्भ में काव्य के अनेक तत्व, जैसे–अलंकार, रस, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य सम्प्रदाय उभरकर सामने आये।

प्रश्न 2. भरतमुनि के रससूत्र को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–आचार्य भरतमुनि रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। उन्होंने 'नाट्यशास्त्र' की रचना कर नाटक के मूल तत्वों का विस्तृत विवेचन करते हुए रस का वर्णन किया है। वे रस को नाटक का प्राणतत्व मानते थे। मनुष्य के जीवन में 'रस' का प्रयोग

www.neerajbooks.com